Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2017: 5.068, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFERRED JOURNAL, JUNE-JULY, 2019, VOL- 7/34

आचार्य नरेन्द्र देव के उच्च–शिक्षा के सम्बन्ध में विचार

(एक विश्लेषणात्मक अध्ययन)

Brijesh Kumar Sharma, Ph. D.

Principal, Ch. Natthu Singh Yadav P G College, Dihuli, Mainpuri

Abstract

आचार्य जी एक ऐसी आदर्श स्वरूपा शिक्षा को चाहते थे जो उपरोक्त तत्वों को viu vUnj lekfgr dj vkj og लोकतंत्रीय चेतना, वैज्ञानिक खोज तथा दार्शनिक सहिश्.krk dk fuek.k dj 0;fDr lekt vkj jk" V d dY;k.k gr lektokn lekt dh jpuk dj ldu e l{ke gkA विद्यालयी शिक्षा स्थानीय तथा राज्य सरकार की साझेदारी होनी चाहिए और उच्च शिक्षा केन्द्र तथा राज्य सरकारों की साझेदारी हो। शिक्षा का प्रशासन तथा नियोजन इसी मूल सिद्धान्त के आधार पर होना चाहिए। केन्द्रीकरण तथा विकेन्द्रीकरण के मध्य एक संतुलन बनाने का प्रयत्न किया जाय। शिक्षा का mRrjnkf;Ro 0;fDrxr i;kl] jkT; rFkk dUnz; ljdkj] rhuk dk gA ge bud egRo dk Lohdkj djuk pkfg, क्योंकि एक सशक्त जीवन दर्शन के लिए यह एक अपरिहार्य आवश्यकता है।

***पारिभाषिक शब्दावली** : उच्च शिक्षा] ufrd ,o ekufld eY;] iu0;k[;k] x.kRed शिक्षा।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

विश्लेषण एंव निष्कर्षः

उच्च शिक्षा की समस्याओं, लक्ष्यों एवं dk;Øek dk nf"Vxr रखते हुए देश की बदलती हुई सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों पर पूरा ध्यान रखते हुए उन्हीं के अनुरूप उच्च शिक्षा के लक्ष्य एवं सुधार कार्यक्रम क्रियान्वित किए जाने चाहिए इस सम्बन्ध में उच्च शिक्षा आयोग ने कहा है कि वर्तमान युग में किसी भी विश्ववि|ky; d tk i/kku y{; gk ldr g] o g& uohu Kku ,o lR; dh [kkt djuk] नवीन आवश्यकताओं तथा खोजों के आधार पर प्राचीन ज्ञान तथा धारणाओं की पुनर्व्याख्या करना, thou d leLr {k=k d fy, mfpr idkr का नेतृत्व प्रदान करना, मानसिक शkfDr;k dk fodkl djuk rFkk mfpr :fp;k] nf"Vdk.kk rFkk ufrd ,o ekufld eY;k dk tUe nuk(lekt dk df"k] dyk] fpfdRlk] foKku] ik|kfxdh rFkk vU; 0;olk;k d लिए योग्य एवं प्रशिक्षित स्त्री–पुरूष inku djuk ftue lkekftdrk dh Hkkoukvk dk fodkl fd;k x;k gk] lkekftd rFkk lkLdfrd vUrjk dk de करना तथा समनता एवं सामाजिक न्याय के लिए प्रयत्नशील रहना, अध्यापकों तथा छात्रों में, vkj mud ek/;e l lekt e, शिक्षा प्रसार द्वारा, ऐसे दृfVdk.kk ,o ekU;rkvk dk c<kok nuk tk 0;fDr;k rFkk lekt dk ,d vPNk thon व्यतीत करने में सहायक हों। भारतीय विश्वविद्यालयों को उक्त लक्ष्यों के अतिरिक्त कुछ विशेष mRrjnkf;Rok dk Hkh ijk djuk gkxkA bu mRrjnkf;Rok dk ijk djuk gekjh lkekजिक तथा शैक्षणिक प्रगति की दृष्टि से आवश्यक है इसलिए हमें–

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

¼1½ jk"Vh; pruk d fodkl d fy; i;kl djukA bl nf"Vdk.k dk fodflr dju d fy; यह आवश्यक है कि लोगों में उपयुक्त धैर्य, भिन्नता एवं सामंजस्य के साथ वैयक्तिकता के fodkl d fy; ikRlkgu fn;k tk;A

¼2½ प्रौढ़ तथा सतत् शिक्षा कार्यक्रमों का विकास विस्तृत रूप से किया जाना चाहिए।

¼3½ x.kkRed :i e Lo; mUufr dju d i;Ruk e fo|ky;k dk lgk;rk nh tkuh pkfg,A

¼4½ ज्ञान के स्तर को ऊँचा उठाने की दिशा में शिक्षण तथा अनुसंधान पर यथोचित बल दिया जाना pkfg,A

¼5½ कुछ ऐसे शिक्षा केन्द्रों का निर्माण किया जाना चाहिए जो कि विश्व के किसh Hkh Hkkx e fLFkr सर्वोत्तम शिक्षा–केन्द्रों की तुलना में निम्नतर सिद्ध न हों तथा जहॉ पर, विश्व के किसी भी केन्द्र में दी जाने वाली शिक्षा को अपने ही देश में प्राप्त किया जा सके।

उपर्युक्त शिक्षा लक्ष्यों dh ikflr d fy, ,d foLrr] Li"V rFkk lfu;kftr dk;Øe dh आवश्यकता होगी। इस सम्बन्ध म निम्न तीन कार्यक्रमों को विशेk egRo fn;k tkuk pkfg,&

¼1½ उच्च शिक्षा तथा अनुसंधान के स्तर में गुणात्मक विकास करने के लिये क्रान्तिकारी परिवर्तन fd, tk;(

¼2½ jk"ट्रीय विकास के लिये आवश्यक जनशक्ति की मॉग तथा समाज की महत्वाका{kkvk ,o आशाओं के अनुरूप उच्च शिक्षा का विस्तार किया जाय; तथा

¼3½ विश्वविद्यालयों के संगठन तथा प्रशासन में सुधार किया जाय।

इस सम्बन्ध में शिक्षा आयोग के सुझाव निम्नवत् हैं :–

¼d½ ^विश्वविद्यालय अनुदान आयोग' द्वारा, शीघ्रातिशीघ्र, वर्तमान विश्वविद्यालयों e l 6 pu g, विश्वविद्यालयों को 'वरिष्ठ विश्वविद्यालयों' के रूप में विकसित किया जाय। इन विश्वविद्यालयों e l de l de 1 ik|kfxdh rFkk 1 df"ा विश्वविद्यालय होना चाहिए। इन विश्वविद्यालयों में doy vlk/kkj.k {kerk ,o v/;olk; oky Nk=k rFkk v/;kidk dk LFkku feyuk pkfg,A

¼[k½ विश्वविद्यालयों का प्रयोग अन्य विश्वविद्यालयों तथा सम्बद्ध महाविद्यालयों के लिये अध्यापक r;kj dju e fd;k tkuk pkfg,A

¼x½ lEc) egkfo|ky;k dk oxhdj.k mud dk; Lrj ,o {kerk d vulkj fd;k tkuk pkfg,A mUg gh tku okyh vkfFkd lgk;rk dk vk/kkj Hkh ;gh oxhdj.k gkA ;fn fdlh विश्वविद्यालय की क्षेत्र सीमा में असाधारण क्षमता वाले महाविद्यालय हों अथवा जहॉ इस प्रकार d egkfo|ky;k dk ,d NkVk lk leg gh ogk mu egkfo|ky;k dk ^Lok;Rrrk* inku dh tk;A

¼?k½ प्रयोगशालाओं और औपचारिक कक्षाआ e i<kb d fy; fn; tku oky ihfj;M de dj nu pkfg,A ,lk dju l tk le; cpxk mldk mi;kx] LorU= v/;;u fu/kkfjr dk;] fucU/k

लेखन, निरीक्षकों के निर्देशन में स्वाध्याय, तथा समस्या समाधान एवं छोटे–छोटे अनुसंधान vk;ktuk dk ijk dju e yxkuk pkfg, rkfd Nk=k e iLrdk ,o vU; lEcfU/kr lkexh dk Lor= :i l mi;kx dju dh {kerk dk fodkl gk ldA

¼3½ Lukrd Lrj ij] ikjfEHkd fLFkfr e {k=h; Hkk"kk के माध्यम से शिक्षण कार्य किया जाय किन्तु LukrdkRrj Lrj ij ek/;e d :i e vxth Hkk"kk dk i;kx gk ldrk gA

¼4½ छात्र सेवाओं को शिक्षा का एक अभिन्न अंग बनाया जाय। इन सेवाओं के अन्तर्गत स्वास्थ्य सेवाएं, निवास की सुविधाएं, मार्ग प्रदर्शन तथा परामर्श, रोजगार दिलाना, आर्थिक सहायता देना vkfn fØ;k, gkuh pkfg,A

¼5½ प्रत्येक विश्वविद्यालय को यह निधkfjr djuk pkfg, fd Nk= l?k dk lpkyu fdl idkj हो। इस क्षेत्र में नवीन प्रयोगों का स्वागत करना चाहिए। 'विश्वविद्यालय अनुदान आयोग' द्वारा इस दिशा में कदम उठाना जाना चाहिए।

¼6½ शिक्षा इस प्रकार की हो कि वह नवयुवकों तथा नवयुवतियों को सभ्य सामाजिक जीवन का Kku djk, rFkk ml Kku dk 0;ogkj e yku dk volj inku dj] mUg egRoi.k thou eY;k d ifr lpr djA

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में छात्र संख्या, प्रवेश नीति तथा अन्य कार्यØek d lEcU/k e fopkj 0;Dr करते हुए शिक्षा आयोग ने कहा है कि उच्च शिक्षा की सुविधाओं का प्रसार देश की जनशक्ति सम्बन्धी आवश्यकताओं rFkk jktxkj d voljk dk nf"V e j[kdj fd;k tkuk pkfg,A df"k] bUthfu;fjx] fpfdRlk vkfn vU; 0;kolkf;d dklk rFkk LukrdkRrj Lrj ij v/;;u fd, tku oky fo" k;k d v/;;u dh lfविधाएं विशेष :i l inku djuh gkxhA bl सम्बन्ध में आयोग ने कुछ विशेष तथ्यों की vkj /;ku vkd"V fd;k gA mue l dN ie[k bl idkj g %&

¼1½ छात्रों को विद्यालयों में प्रवेश देने के लिये एक चयनात्मक प्रवेश प्रणाली को स्वीकार करना gkxkA bl gr fuEufyf[kr rhu vk/kkjk dh lgk;rk yh tk ldrh g&

¼d½ शिक्षा संस्थाओं में अध्यापकों तथा अन्य तत्सम्बन्धी सुविधाओं की उपलब्धि के आधार पर यह देखना कि अमुक संस्था में कितने छात्रों को प्रवेश दिया जा सकता है। शिक्षा के स्तर को बनाए रखने के लिए इस पर ध्यान देना नितान्त आवश्यक है(

¼[k½ विश्वविद्यालयों द्वारा प्रवेश योग्यताओं का निर्धारण; तथा

¼x½ महाविद्यालय विशे" ा में प्रवेश की इच्छा रखने वाले छात्रों में से सर्वोत्तम छात्रों का puko dju dh fof/kA

¼2½ स्नातकोत्तर शिक्षा तथा अनुसंधान कार्य की व्यवस्था, सामान्य रूप से विश्वविद्यालयों अथवा विश्वविद्यालय के उन केन्द्रों में होनी चाहिए जहॉ पर इस प्रकार के कार्यक्रमों को विभिन्न LFkkuh; egkfo|ky;k d lkefgd i;Ruk }kjk pyk;k tk ldA

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

¼3½ bl समय उच्च शिक्षा में स्त्री एवं पुरूष Nk=k dk vuikr 1%4 dk gA fdUr fofHkUu {k=k e शिक्षित महिलाओ की आवश्यकता को देखते हुए यह अनुपात बढ़ाकर कम से कम 1:3 करना gkxkA vxfyf[kr fl)kUrk dk nf"टपथ में रखना आवश्यक होगा–

¼d½ नवीन विश्वविद्यालय खोलने से पहले यह निश्चित कर लिया जाय कि ऐसा करने से शिक्षा के स्तर में उन्नति होगी और उससे उच्च स्तर का अनुl/kku dk; fd;k tk ldxk(rFkk

¼[k½ 'विश्वविद्यालय अनुदान आयोग' द्वारा नवीन विश्वविद्यालय खोलने की सहमति प्राप्त कर yh xb g ,o bl gr i;klr /ku dh 0;oLFkk Hkh dj yh x;h gA

¼4½ {k=h; rFkk jkVh; Lrj ij vk;kftr f,d tku oky lgdkjh dk;Øek e lHkh विश्वfo|ky;k dk Hkkx yuk pkfg, rFkk vul/kku vkfn {k=k e vkilh vknku inku }kjk bu dk;k dk c<kok Hkh nuk pkfg,A bl idkj d dk;क्रमों को प्रोत्साहन देना विशेष :i l foश्वविद्यालय अनुदान आयोग का विशिष्V mRrjnkf;Ro gkA

¼5½ dyk rFkk foKku nkuk gh {k=k e ikB;Øek e ftu fo"k; legk dk i<u dh lfo/kk bl le; inku dh x;h g] ml vkj vf/kd ypdnkj cuk;k tk;A

¼6½ भारतीय विश्वविद्यालयों एवं शkk/k lLFkkuk e ^lkekftd foKkuk* dk egRoi.k LFkku fn;k tkuk pkfg,A

¼7½ मानव शkkL= d v/;यन पर आवश्यकता से अधिक बल न दिया जाय।

¼8½ कुछ चुने हुए विश्वविद्यालयों तथा शिक्षण संस्थाओं में 'क्षेत्रीय अध्ययन' के एक प्रभावशाली dk;Øe dh ;ktuk dk fodfLr fd;k tk;A

¼9½ शिक्षा नीति के निर्धारण तथा शिक्षा में सुधार करने के लिये शk{kf.kd vul/kku dk fodflr करने की दिशा में प्रयत्न किए जाने चाहिये। इस हेतु निम्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जा ldrk g&

¼d½ शk{kf.kd अनुसंधान तथा प्रशिक्षण की राष्Vh; ifj"kn e शिक्षा सम्बन्धी सूचनाओं तथा शk{kf.kd vul/kku lEcU/kh Kku] lpuk rFkk lfo/kkvk dk jk"Vh; Lrj ij miyC/k djku d fy, ,d dUn dh 0;oLFkk dh tk;A

¼[k½ शिक्षा से सम्बन्धित सभी क्षेत्रों में शk{kf.kd vul/kku dk fodflr fd;k tk;A

¼x½ शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न विचारधाराओं तथा अनुसंधान को प्रोत्साहन देने के लिये एक jk"ट्रीय शिक्षा अकादमी की LFkkiuk dh tk; ftld lnL; yC/k ifrf"Br शिक्षा–शास्त्री हों।

¼?k½ शk{kf.kd vu l/kku ij gku oky 0;; e i;klr ek=k e of) dh tk;A vk;kx d मतानुसार यह राशि राज्य सरकार द्वारा सम्पूर्ण शिक्षा पर व्यय की जाने वाली राशि का कम से कम 1 प्रतिशत होनी चाहिए।

उचित प्रशासन हेतु विश्वविद्यालयों के विधान के सम्बन्ध में उच्च शिक्षा आयोग ने निम्न सुझाव fn; g ¾&

¼d½ विश्वविद्यालय की नीति का निर्धारण कोर्ट द्वारा होना चाहिये।

¼[k½ विश्वविद्यालय की कार्यकारिणी परि" kn e 15 l 20 rd lnL; gku pkfg,A bue l vk/k lnL; ckgj d rFkk ifj" kn dk v/;{k midyifr gkA

¼x½ पाठ्यक्रमों के निर्धारण तथा स्तर पर निश्चय करने के लिए अकादमिक परि" kn gh ,d ek= vkf/kdkfjd lLFkk gkxhA lkfgR; ifj" kn dh ,d LFkk;h lfefr gkuh pkfg, tk अत्यावश्यक मामलों पर विचार करेगी।

¼?k½ अन्तर विश्वविद्यालयी बkM }kjk ,d lfefr dh fu;fDr dh tkuh pkfg, ftldk dk; दीक्षान्त समारोहों पर ली जाने वाली प्रतिज्ञाओं, उपदेशों तथा प्रक्रिया से सुधार करना होगा।

¼³½ विश्वविद्यालय के विधान को लागू करने से पूर्व विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, शिक्षा मन्त्रालय rFkk jkT; ljdkjk d eध्य विचार विमर्श करने के लिए एक उपयुक्त ढंग अथवा मार्ग का fuek.k fd;k tk;A

mi;Dr l>kok d vfrfjDr dN vU; egRoi.k l>ko bl idkj g ¾&

¼1½ lEc)& fo|ky;k l lEcfU/kr fo" k;k ij fopkj dju d fy, iR;d lEc)kRed विश्वविद्यालय में ऐसे महाविद्यालयों की ,d ifj" kn cukbZ tkuh pkfg,A egkfo|ky;k dk सम्बद्ध करने के आधार का निर्णय किया जाना चाहिए तथा सम्बद्धता को एक विशे" kkf/kdkj ekuk tk;A egkfo|ky;k e Nk=k dh l[;k dk fu/kkj.k ogk ikIr lfo/kkvk d vu:i gkuk pkfg,A

¼2½ lgk;rk vunku nu d fu;ek dk ljy cuk;k tk; rFkk bl idkj dh uhfr viukbZ tkuh pkfg, ftlI vPN fo|ky;k dk vi{kkdr vf/kd lfo/kk, rFkk lgk;rk fey ldA

¼3½ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग में 12 से 15 तक सदस्य होने चाहिये। इस संख्या के 1/3 lnL; ljdkjh vf/kdkjh gk rFkk de l de 1/3 सदस्य ही विश्वविद्यालयों से लिए जायें।

fu" d" तः विश्वविद्यालयी शिक्षा का लक्ष्य नवीन ज्ञान की खोज करना, उचित प्रकार का urRo inku djuk] ;kX; 0;fDr;k dk r;kj djuk] lkekftd ,o lkLdfrd vUrjk dk de djr g, lekurk rFkk lkekftd U;k; dk c<kok nuk g। भारतीय विश्वविद्यालयों का लक्ष्य विशे" k :i l jk" Vh; pruk dk tkxr djuk rFkk lekt e /k;] lgdkfjrk ,o lkekftdrk d okrkoj.k e वैयक्तिकता का विकास करना है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विशे" I महत्व वाले कार्यक्रम हैं– उच्च शिक्षा

d Lrj rFkk vul/kku d {k= में एक क्रान्तिकारी सुधार करना, उच्च शिक्षा की सुविधाओं का देश की आवश्यकताओं तथा जनशक्ति की मॉग के अनुरूप विस्तार करना, तथा विश्वविद्यालय के संगठन एवं प्रशासन में सुधार करना सम्भव हो सके।

उच्चशिक्षा में आनुभविक समस्यायें :

vkpk; ujUn no u viu nk उप कुलपतित्व काल में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में निम्न समस्याएं अनुभूत dh&

½1½ उच्च शिक्षा संस्थानों की संख्या में वृद्धि होनाA

½2½ dky tk dk foLrkj gkukA

½3½ नए–नए विश्वविद्यालयों की स्थापनाएं होनाA

½4½ सरकार और विश्वविद्यालय शिक्षाA

½5½ foRrh; vHkkoA

½6½ 0;fDrxr dkyt dh LFkkiuk,A

½7½ व्यावसायिक शिक्षा का अभावA

½8½ पुरातन शिक्षण विधियॉ/शिक्षण माध्यम की समस्याएंA

½9½ उच्च शिक्षा स्तर पर विद्यार्थियों की संख्या में निरन्तर वृद्धि इत्यादि।

mi;Dr leL;kvk d lek/kku d fy, vkiu l>ाव दिए कि शिक्षा के गुणात्मक विकास की दिशा में स्प" ट, विस्तृत तथा उदार लक्ष्यों का निर्धारण करना चाहिए। शिक्षा के सभी कार्यक्रमों में कुछ u dN dju dh uhfr dk NkMdj doy dN gh egRoi.k dk;Øek ij ge viuk /;ku dfUnr djuk pkfg,A ,lk u dju l vi0;य बढ़ता है। विद्यालयी शिक्षा स्थानीय तथा राज्य सरकार की साझेदारी होनी चाहिए और उच्च शिक्षा केन्द्र तथा राज्य सरकारों की साझेदारी हो। शिक्षा का प्रशासन rFkk fu;ktu blh ey fl)kUr d vk/kkj ij gkuk pkfg,A dUnhdj.k rFkk fodUnhdj.k d e/; ,d lryu cuku का प्रयत्न किया जाय। शिक्षा का उत्तरदायित्व व्यक्तिगत प्रयासों, राज्य तथा केन्द्रीय सरकार, तीनों का है। हमें इनके महत्व को स्वीकार करना चाहिए क्योंकि एक सशक्त जीवन दर्शन के लिए यह एक अपरिहार्य आवश्यकता है।

संदर्भः

सक्सेना जगदीश (2006) प्रयोगवाद एवं नरेन्द्र देव, साहित्यालोचन प्रकाशन, कानपुर।

सक्सेना एस.सी. (2009) आचार्य नरेन्द्र देव एवं बौद्ध धर्म दर्शन, परिशोध प्रकाशन, चण्डीगढ़।

श्रीवास्तव प्रमोद (2003) आधुनिक राष्ट्रीय चेतना और साहित्यः नरेन्द्र देव की दृष्टि में, रचना प्रकाशन, इलाहाबाद।

सक्सेना राकेशधर (2007) आचार्य नरेन्द्र देव और समाजवाद, समता प्रकाशन (प्रथम संस्करण), पटना (बिहार)।

'दैनिक सवेरा' – स्थानीय समाचार–पत्र; लखनऊ प्रकाशन 23 दिसम्बर 1949, पृ" ठांकन–1 से उद्घृत अंश ।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

** श्रीप्रकाश ; भारतीय शिक्षा की समस्याएं, मीनाक्षी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, 1966, पृ" B 20

आचार्य नरेन्द्र देव द्वारा दिया गया शिक्षा, व्यक्ति और समाज सम्बन्धी मॉडल

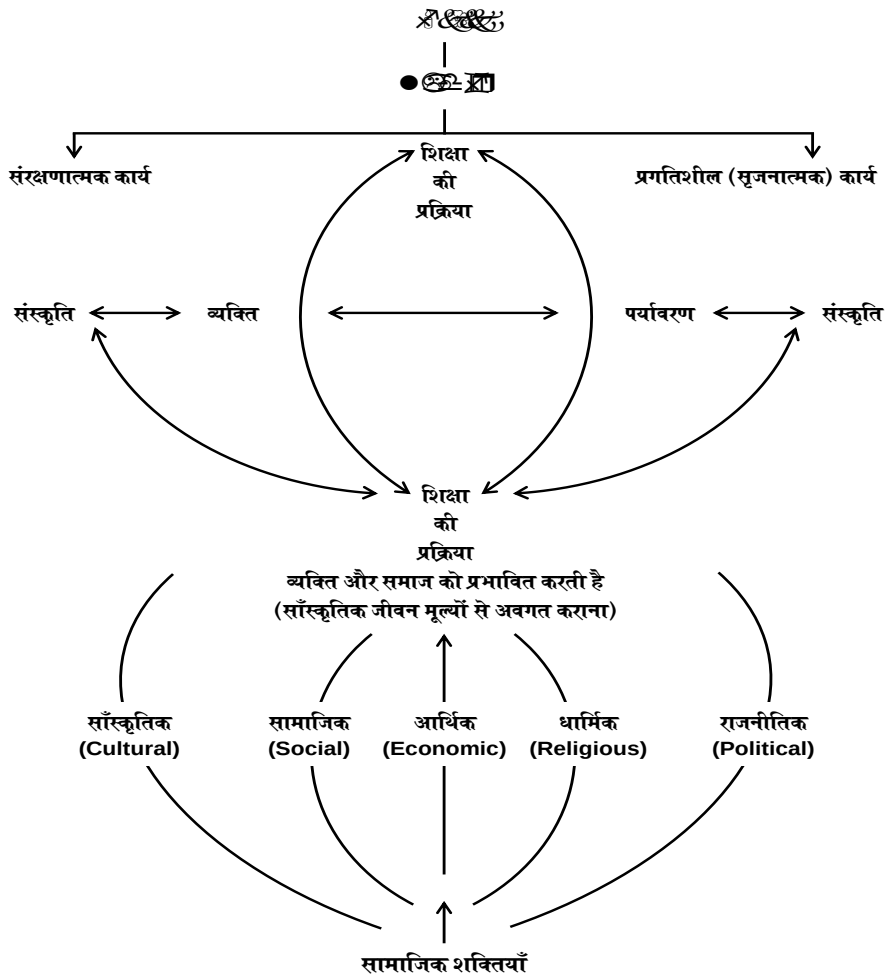

कुलपति, आचार्य नरेन्द्र देव की कलम से : काशी विद्यापीठ में शैक्षिक पर्यावरण सम्बन्धी विचारधारा (वार्षिक पत्रिका के लेख से संकलित) सन् १९५२, पृष्ठ ३

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies